राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली, मंगलवार, 18 दिसम्बर, 2007

फोटो : एसएनबी

■ युवाचार्य लोकेश पदाभिषेक समारोह के समापन पर हिंसा, आतंक और तनाव मुक्त भारत संकल्पाभिव्यक्ति समारोह में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल की मौजूदगी में संकल्प लेते हुए आचार्य लोकेश जी, स्वामी अग्निवेश, मौलाना उमर इलियासी, सरदार परमजीत सिंह आदि।

हिंसा और आतंक के खिलाफ धर्मगुरु अलख जगाएं : राष्ट्रपति

सहारा न्यूज ब्यूरो
नई दिल्ली, 17 दिसम्बर।

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने कहा कि हिंसा, आतंक और तनाव दूर करने के लिए जात-पांत को दरकिनार करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि दुनियाभर के धर्मगुरु एकमत होकर इन कुरीतियों के खिलाफ मानवता, एकता, अहिंसा, सदाचार, भाईचारा की अलख जगाएं। हिंसा और आतंक से केवल भारत ही नहीं, पूरी दुनिया भयाक्रांत है। उसे जड़ से खत्म करने के लिए धर्मगुरुओं को आगे आना होगा।

श्रीमती पाटिल राष्ट्रीय एकता समिति द्वारा राष्ट्रपति भवन में युवाचार्य लोकेश पदाभिषेक समारोह के समापन पर हिंसा, आतंक और तनावमुक्त भारत संकल्पाभिव्यक्ति के त्रिदिवसीय समारोह के समापन सत्र में बोल रही थीं। समारोह में आचार्य मानमलजी, स्वामी अग्निवेश, प्रदीप जैन, मौलाना उमर इलयासी, फादर वर्गिस समेत विभिन्न धर्मों के धर्माचार्य व बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद थे। उन्होंने कहा कि धर्म को समाज सेवा से जोड़ने की जरूरत है। उसे सामाजिक कुरीतियों के मिटाने का जरिया बनाना चाहिए।

राष्ट्रपति ने नव मनोनीत युवाचार्य को बधाई देते हुए कहा कि समाज निर्माण में मुनि लोकेश जी की उल्लेखनीय सेवाएं रही हैं। दूसरों के विचारों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। भारत ने हमेशा ही सर्वधर्म समभाव की परंपरा का पालन किया है। उन सिद्धांतों पर चलकर ही हम हिंसा, आतंक मुक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।